रघुवंशम्

(1)

वागर्थाविव ---------- पार्वतीपरमेश्वरौ

सन्दर्भ :- प्रस्तुत श्लोक कवि कनिष्ठिकाधिष्ठित विविधविद्याविद्योतितान्तः करण महाकवि कालिदास द्वारा रचित एकोनविंशति सर्गात्मक रघुवंशम्महाकाव्य के प्रथम सर्ग से लिया गया है। इस महाकाव्य में कालिदास ने रघुवंश में उत्पन्न हुए समस्त राजाओं का चरित्र प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ में राजा रघु से लेकर अंतिम शासक अग्निवर्ण पर्यन्त 33 रघुवंशी राजाओं का चरित्र प्रतिपादित किया गया है।

प्रसंग :- संस्कृत साहित्य में तीन प्रकार के मंगलाचरण होते हैं - (1) नमस्कारात्मक (2) आशीर्वादात्मक (3) वस्तुनिर्देशात्मक प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य का आरम्भ करने से पूर्व नमस्कारात्मक मंगलाचरण के द्वारा जगत के माता - पिता अर्थात् शिव - पार्वती की वन्दना की है।

व्याख्या :- कालिदास कहते हैं कि मैं वाणी और अर्थ ज्ञान के निमित्त तथा शब्द और शब्दार्थ की तरह जुड़े हुए जगत के

Scanned with CamScanner

माता पिता (शिव - पार्वती) को प्रणाम करता हूँ।

टिप्पणी:- (i) पित्तरौ में द्वन्द समास का प्रयोग किया गया है। (माता च पिता च)

(ii) सम्पृक्तौ = सम् + पृ + क्त

(iii) पार्वतीपरमेश्वरौ = पार्वती च परमेश्वरश्च।

छन्द:- प्रस्तुत श्लोक में अनुष्टुप छन्द का प्रयोग किया गया है। क्योंकि इस श्लोक में 8-8 वर्ण के चार चरण है तथा अनुष्टुप के अनुसार हो इसमें छठा वर्ण गुरु तथा पाचवाँ वर्ण लघु तथा द्वितीय व चौथे चरण का सातवाँ वर्ण लघु तथा पहले व तृतीय चरण का सातवाँ वर्ण गुरु होता है।

अलंकार:- इस पद्य में शिव और पार्वती को वाणी और अर्थ के समान बताया है। अतः यहाँ उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है।

Scanned with CamScanner

(2)

क्व सूर्यप्रभवो ------- सागरम्।

सन्दर्भः- प्रस्तुत श्लोक कवि कनिष्ठिकाधिष्ठित ---- -------- प्रतिपादित गया है।

प्रसंगः- प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने अपनी बुद्धि का परिचय देते हुए विनम्रता व शालीन का वर्णन किया है।

Scanned with CamScanner

व्याख्या :- कालिदास कहते हैं कि कहाँ तो सूर्य से उत्पन्न हुआ वंश और कहाँ थोड़े ज्ञान वाली मेरी बुद्धि अर्थात् वह कहता है कि मैं मूर्ख व्यक्ति हूँ जो विशाल तरंगों रूपी समुद्र को छोटे सी नौका के सहारे पार करना चाहता हूँ।

टिप्पणी:- (i) सूर्य प्रभव = सूर्यप्रभवः यस्य सः (बहुव्रीहि समास)

(ii) अल्पविषया = अल्पः विषयः यस्याः सा
(बहुव्रीहि समास)

(iii) दुस्तरम् = दुस् + तृ + खल् ।
उपसर्ग, धातु, प्रत्यय

(iv) तितीर्षुः = तृ + सन् + उ ।

(v) सागरम् = सगर + अण् ।
धातु उपसर्ग प्रत्यय

छन्द :- इस श्लोक में भी अनुष्टुप् छन्द इस लक्षण के द्वारा बताया गया है -
श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमं ।
द्विचतुष्पादयो। सप्तम दीर्घ मन्ययोः ॥

अथवा कृतवाग्द्वारे ------ सूत्रस्येवास्ति मे गतिः॥

सन्दर्भः- —

प्रसंगः- प्रस्तुत श्लोक में अपने-आपको मन्दबुद्धि कहने के पश्चात् कवि सोचता है कि उसे यह प्रयास छोड़ देना चाहिए किन्तु पुनः सोचने पर उसे यह अनुचित लगता है। अनुचित लगने का कारण वह इस श्लोक में प्रस्तुत करता है।

व्याख्या:- कवि कहता है कि प्राचीन कवियों ने इस ग्रन्थ का वर्णन पहले ही कर दिया है अर्थात् उन कवियों ने इस ग्रन्थ का द्वार पहले ही खोल दिया है मुझे तो केवल इस द्वार में प्रवेश उसी प्रकार करना है जिस प्रकार हीरे के छेद में से मणि के डोरे का प्रवेश होता है अर्थात् मुझे तो केवल उनके मार्गदर्शन पर ही चलना है।

विशेषः- (i) कृतवाग्द्वारे = कृतं वाग्द्वारं यस्य सः कृतवाग्द्वारः त (बहुव्रीहि)

(ii) समुत्कीर्णः = सम् + उत्कृ + क्त।

(iii) गतिः = गम् + क्तिन्।

(iv) पूर्वसूरिभिः = पूर्वश्च ते सूर्यः (कर्मधारय)

छन्द :- अनुष्टुप्।

(7)

त्यागाय .... गृहमेधिनाम्॥

सन्दर्भ :-

प्रसंग :- प्रस्तुत श्लोक में सूर्यवंशी राजाओं के चरित्र, गुण आदि का वर्णन करते हुए राजाओं की अनुपम विशेषताएँ प्रस्तुत की है।

व्याख्या :- कालिदास कहते है कि अपितु मुझमें सूर्यवंशी राजाओं के वर्णन करने की शक्ति कम है तथापि मैं उन राजाओं के प्रताप का वर्णन करूँगा। क्योंकि उन राजाओं का संस्कार और चरित्र जन्म से अन्त तक शुद्ध था। वे अपने नियमों का पालन करते थे। वे सदैव ही विधिवत रूप से हवन करते थे। याचकों की इच्छा अनुसार धन देते थे। वे दण्ड अपराध के अनुसार देते थे। वह सत्पात्र को दान देने के लिए ही धन एकत्रित करते थे। वह अपनी कीर्ति के विस्तार के लिए ही विजय को प्राप्त करते थे तथा सन्तानउत्पत्ति के लिए ही विवाह करते थे। अर्थात् सूर्यवंशी राजा कोई भी कार्य अपने लाभ के लिए नहीं करते थे अपितु अपनी प्रजा के उद्धार के लिए किया करते थे।

तं सन्त : _ _ _ _ _ _ _ श्यामिकापि वा॥

सन्दर्भ :-

प्रसंग :- इस श्लोक में रघुवंशी राजा पु अवस्थाओं को किस प्रकार व्यतीत करते थे तथा कवि को यह महाकाव्य लिखने की प्रेरणा उनकी बुद्धि से नहीं अपितु उनके गुणों से मिली है उसका वर्णन किया गया है

व्याख्या :- कालिदास कहते है कि रघुवंशी लड़क पन में तो विद्या प्राप्त करते थे। युवावस्था में भोग की इच्छा करते थे। बुढ़ में परमात्मा में ध्यान में तथा अन्त योग करते थे। वह कहते है रघुवंश

सदैव गुणों से पहचाने जाते थे न कि अपनी बुद्धि से। रघुवंशी सदैव सज्जन थे। वे हमेशा अच्छे कार्यों में लगे रहते थे। जिस प्रकार अच्छे व बुरे कार्य को सुनकर किसी व्यक्ति का चरित्र-चित्रण उसी प्रकार ज्ञात कर सकते है जिस प्रकार हमें खरे सोने को पहचान उसे आग में तपाकर करते है।

विशेष:- (i) हेम्नः = हि + मनिन्

(ii) विशुद्धिः = वि + शुद्ध + क्तिन्

छन्द:- अनुष्टुप् छन्द।

अलंकार:- अर्थान्तरन्यास। क्योंकि इसमे स बात कहकर किसी विशेष बात का समर्थन दिया गया है। इसीलिए य पर अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

Scanned with CamScanner

(16)

श्रीमत्कान्तैर्नृपगुणैः ---- यादोरत्नैरिवार्णवः॥

सन्दर्भः-

प्रसंग:- इस श्लोक में महाकवि कालिदास ने राजा दिलीप की विशेषता के साथ उनके प्रति भय व आदर की भावना का वर्णन किया गया है।

व्याख्या:- राजा दिलीप का शरीर जैसा सुन्दर था वैसी ही कुशाग्र उनकी बुद्धि थी। जैसी उनकी कुशाग्र बुद्धि थी वैसे ही वह शास्त्र को जानते थे। जैसा वह शास्त्र को जानते थे वैसे ही उनके कर्म थे तथा जैसे वह कर्म करते थे वैसी ही उन्हे सफलता प्राप्त होती थी। जिस प्रकार समुद्र में मगरमच्छ आदि भयंकर जन्तु रहने से उस समुद्र में लोग जाने से डरते हैं किन्तु रत्नों के लालच से लोग उसमें घुसते भी हैं वैसे ही राजा दिलीप का विशाल शरीर देखकर प्रजा डरती भी है किन्तु उनके स्नेह भरे स्वभाव से उनके पास जाते भी है।

विशेष:

तस्य ------------- प्राक्तना इव॥

सन्दर्भ :-

प्रसंग :- इस श्लोक में राजा दिलीप के कुशल शासक होने का प्रमाण मिलता है कि उसने कितनी कुशलतापूर्वक प्रजा पर अपना नियन्त्रण कर रखा है और किस प्रकार प्रजा भी उसका अनुसरण करती है।

व्याख्या :- जिस प्रकार अच्छा सारथी रहने पर रथ का पिछला पहिया अगले पहिये के द्वारा बनाये हुए निशाने पर चलता है। उसी प्रकार राजा दिलीप की प्रजा भी उसके नियमों का उल्लंघन नहीं करती है और दिलीप राजा भी सूर्य के समान हजार गुना लौटाने के लिए कुछ रसो को खींचता है तथा हजार गुना पृथ्वी को लौटाता है। उसी प्रकार राजा दिलीप भी नाम मात्र कर लेता है तथा प्रजा का कल्याण में उसे लगाता है राजा दिलीप की जो सेना है वह नाममात्र की सेना ही नहीं है बल्कि वह सैदव शास्त्र में कुशाग्र व युद्धो के लिए तैयार रहते थे।

विशेष:- (i) परिच्छदः = परि + छद् + घ

(ii) आतता = आ + तन् + क्त + टाप्

अनाकृष्ट ------- जरसा विना ॥

सन्दर्भ :-

प्रसंग :- इस श्लोक में राजा दिलीप की विशेषताओं के विषय में बताया गया है तथा उनके सभी गुणों का भी विवेचन किया गया है।

व्याख्या :- राजा दिलीप अपने शासन के भेदों को गुप्त रखता है। उसको बाहर व भीतर के भावों को भी कोई नहीं जान सकता है। राजा दिलीप को कार्य की सिद्धि हो जाने पर ही प्रजा को यह मालूम होता है कि उन्होंने कोई कार्य प्रारम्भ किया था। वह राजा बिना भयभीत हुए रक्षा करता है, स्वस्थ होते हुए धर्म का पालन करता है, लोभ रहित रहित होकर धन का संग्रह करता है और मोह का परित्याग कर सुखों का अनुभव करता है। राजा दिलीप शान्त रहता है, शक्तिशाली है फिर भी क्षमाशील है। दान भी इसलिए नहीं करता ताकि कि उसे बड़ाई की आवश्यकता अपितु लोगों की भलाई के लिए दान करता है। उसे लोगों अनुभवी होने के कारण वृद्ध की उपाधि देते हैं। वह सदैव ही मोह-माया दूर रहता था तथा

समस्त विधाओं मे पारंगत था।

विशेष:- (i) अनाकृष्टस्य = न आकृष्टोऽनाकृष्टः
तस्य अनाकृष्टस्य
(नञ् तत्पुरुष)

(ii) पारदृश्वनः = पार + दृश + क्वनिप्।

(iii) विद्यानाम् = विद् + क्यप् + टाप्।

छन्द:- अनुष्टुप् छन्द

Scanned with CamScanner

न किलानुयमुस्तस्य _ _ _ तस्याशिक्षा

सन्दर्भ :-

प्रसंग :- प्रस्तुत श्लोक में राजा दिलीप का प्रजा के प्रति व्यवहार व प्रेम को बताया है तथा प्रजा भी किस प्रकार उसकी बातो का अनुसरण करती है।

व्याख्या :- राजा दिलीप प्रजाओ को शिक्षा प्रदान करने के कारण, उनकी रक्षा करने के कारण और उनका पालन-पोषण करने के कारण वही सच्चा पिता कहलाता था। उसके पिता तो केवल उन्हे जन्म देने वाले थे। वह अपराधियो को दण्ड केवल शान्ति के लिए देता था न कि धन कमाने के लिए। वह केवल

सन्तान उत्पत्ति के लिए ही विवाह करता था न कि प्रेम के लिए। इस प्रकार उसका हर अर्थ व काम धर्म का पालन करता था। जिस प्रकार भगवान इन्द्र धान के लिए आकाश से बारिश करवाते है व राजा दिलीप अपनी सम्पत्ति से पृथ्वी पर यज्ञ किया करते थे ताकि प्रजा का भला हो सके। इस प्रकार दोनों ही प्रजा के लिए स्वयं को लगाते थे। प्रजा की रक्षा करने से दिलीप को अत्यधिक यश प्राप्त हो गया था किन्तु बाकी राजा केवल नाम मात्र के लिए राजा पहचाने जाते थे।

विशेष :- (i) परेस्वेभ्यः = परेषां स्वानि परस्वानि तेभ्यः

(ii) तस्करता = तस्कर + तल्।

(iii) श्रुतौ = श्रु + क्तिन्।

(iv) रक्षितुः = रक्ष + तृच्।

संतानार्थाय _ _ _ _ _ सचिवेषु निचिक्षिप

सन्दर्भ:-

प्रसंग:- प्रस्तुत श्लोक में राजा दिलिप की पत्नी सुदक्षिणा का वर्णन करते हुए पुत्र प्राप्ति न होने का वर्णन है।

व्याख्या:- कालिदास कहते है कि जिस प्रकार यज्ञ की पत्नी दक्षिणा थी उसी प्रकार मगधवंश से पैदा हुई स्त्री राजा दिलिप की पत्नी थी। जिसका नाम उदारता के कारण प्रसिद्ध था। राजा दिलिप की बहुत पत्नियाँ थी किन्तु राजा दिलीप सुदक्षिणा को अपनी पत्नी तथा राज्य की लक्ष्मी मानते थे। राजा दिलिप की यह इच्छा थी कि रानी सुदक्षिणा से उसे पुत्रप्राप्ति हो किन्तु बहुत समय साथ रहने के पश्चात भी राजा दिलीप व सुदक्षिणा को पुत्र प्राप्ति नहीं हुई। सन्तान प्राप्ति के लिए कोई भी अनुष्ठान करने के लिए अपना सारा भार मन्त्रियो को सौंप दिया था। तथा उन्होंने पुत्र प्राप्ति हेतु कई अनुष्ठान व यज्ञ-तप आदि करवाये किन्तु उन सब कुछ नहीं हुआ।

Scanned with CamScanner

(५०)

परस्पराक्षिसादृश्यम ---- स्यन्दनाबद्धदृ

सन्दर्भ :-

प्रसंग :- इस श्लोक में राजा-रानी सन्तान प्राप्ति न होने अपने कुल गुरु के वहाँ जाने का विचार करते है तथा रास्ते में आए प्रकृति चित्रणकवर्णन किया है।

व्याख्या :- राजा-रानी पवित्र अन्तःकरण मन से पुत्र-प्राप्ति की इच्छा लिए हुए ब्रह्मा की पूजा करके गुरु वशिष्ठ के आश्रम की ओर चले गये। मनोहर और गंभीर शब्द करने वाले एक ही रथ पर बैठकर चले जा रहे थे आश्रम में विघ्न न हो ऐसा सोचकर थोड़े ही सेवक अपने साथ लिए परन्तु विशेष तेज के कारण वे राजा-रानी ऐसे मालूम हो रहे थे मानो पूर्ण सेना घिरे हुए हो। छूने पर सुखदायी था शाल वृक्ष के गोंद में सुगन्धित तथा फूलों से बिखरने वाले और वन में वृक्षों को धीरे-धीरे हिला देने वाले पवन वे दोनो आनन्दित थे। रथ की पहियों की आवाज सुनकर मोर सिर ऊपर उठाकर केका ध्वनि करते है। वे उस ध्वनि

को सुनते हुए मार्ग मे आगे चलते है।
रथ के आगे आने वाले मृग रथ की आवाज सुनकर कर रास्ते से हट जाते है। तब वह राजा दिलीप एक बार मृगों की आँखो को देखता है और दूसरी ओर सुदक्षिणा के नेत्रो को देखता है।

विशेषः- (i) अदूरोज्झितवर्त्मसु = अदूरे उद्-ज्झित वर्त्म येषु तेषु (बहुव्रीहि)

(ii) स्यन्दनाबद्धदृष्टिम् = स्यन्दन बद्ध दृष्टि येषाम्

छन्दः- अनुष्टुप्।

रघुवंशम् (अतिलघुत्तरप्रश्न)

(i) रघुवंशम् महाकाव्यस्य रचयिता कोऽस्ति?
उ० कालिदास:

(ii) रघुवंशम् महाकाव्ये कति सर्गा: सन्ति?
उ० एकोनविंशति (19)

(iii) रघुकुलस्य प्रथम: नृप: क: आसीत्?
उ० दिलीप

(iv) जगत: पितरौ कौ स्त:?
उ० पार्वती परमेश्वरौ (शिव - पार्वती)

(v) नृप: दिलीप: कस्मिन् वंशे प्रादुरभूत?
उ० सूर्यवंशी

(vi) नृप: दिलीप: किमर्थं: पृथिवीं दुदोह?
उ० यज्ञान

(vii) सुदक्षिणा कस्य देशस्य राजकुमारी आसीत्?
उ० मगध

(viii) रघुवंशमहाकाव्य प्रथम सर्गे कति श्लोका: सन्ति?
उ० 95

(ix) पुत्र प्राप्तिकामनया दिलीप दम्पती कुत्र गतवन्तौ?
उ० वशिष्ठ आश्रम गतवान्।

(x) कालिदासस्य प्रियः छन्द कः अस्ति
उ० अनुष्टुप

(xi) दिलीपस्य भार्या नाम कः अस्ति?
उ० सुदक्षिणा।

(xii) नन्दिन्या माता नाम किमासीत्?
उ० कामधेनुः

Scanned with CamScanner

छन्द—प्रस्तुत श्लोक में अनुष्टुप् छन्द है।

प्रश्न—रघुवंश के प्रथम सर्ग के आधार पर दिलीप का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—रघुवंश एक प्राचीन महाकाव्य है— यह वह महाकाव्य है जिसके आधार पर अलंकारशास्त्रियों ने महाकाव्यों के लक्षण आदि निर्धारित किये। रघुवंश वह महाकाव्य है जिसमें नायक एक न होकर अनेक हैं। महाकाव्य के प्रथम दो सर्गों में सूर्यवंशी राजा दिलीप का चित्र अंकित हुआ है। प्रथम सर्ग में कालिदास ने रघुवंशियों के गुणगान का जो कारण बताया है, उससे उनके राजकीय आदर्श पर यथेष्ठ आलोक पड़ता है— 'ये राजा जन्म से लेकर अन्त तक शुद्ध रहे, उनका राज्य समुद्र के छोर-छोर तक विस्तृत था, शास्त्रों के नियमानुसार वे यज्ञ करते थे, मांगने वालों को मनोवांछित दान देते थे अपराधियों को अपराध के अनुरूप दण्ड देते थे, अपना यश बढ़ाने के लिए अन्य देशों को जीतते थे। भोग विलास के लिए नहीं, अपितु सन्तानोत्पादन के लिए ही विवाह करते थे, शैशव में विद्याभ्यास करते थे। यौवन में विषयोपभोग करते और वृद्धावस्था में मुनियों के समान जंगलों में रहकर तपस्या करते थे। अन्त में परमात्मा का ध्यान करते हुए शरीर त्याग करते थे। उक्त विशेषतायें वस्तुतः रघुवंशी राजाओं की सामान्य विशेषताएँ थीं- उनके जीवन के आदर्श थे। ये

Scanned with CamScanner

विशेषताएँ दिलीप, अज, रघु, दशरथ एवं राम आदि सभी में थीं।

जहाँ तक दिलीप के चरित्र की अन्य विशेषताओं का सम्बन्ध है, हम संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं—

सुन्दर एवं बलिष्ठ व्यक्तित्व के धनी—राजा दिलीप सुन्दर व्यक्तित्व के धनी थे। कवि ने उनकी तुलना चन्द्रमा से की है। उनके व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए लिखा है—

"व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः।
आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः॥" (1/13)

'छाती चौड़ी, वृषभ के समान ऊंचे और भारी कन्धे तथा शालवृक्ष के समान लम्बी भुजाएँ थीं, उनका अपार तेज देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे क्षत्रियों का धर्माश्रित शौर्य अपने कर्मसम्पादन के निमित्त उनके शरीर में अवतीर्ण हो गया हो।'

इस प्रकार उनका विशाल व्यक्तित्व था। वे सभी प्राणियों से अधिक बलशाली, सभी जीवों को अपने तेज से पराभूत करने वाले, सबसे उन्नतशील शरीर के द्वारा सुमेरू के समान पृथ्वी को आक्रान्त करके स्थित थे। वे आकार के अनुरूप बुद्धि वाले, बुद्धि के समान शास्त्र का अभ्यास करने वाले, शास्त्राभ्यास के अनुसार उद्योग करने वाले तथा उद्योग के अनुसार फल को प्राप्त करने वाले थे।

संक्षेप में वे विशालाकृति, बुद्धिमान्, शास्त्रज्ञ, उद्यमी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न थे।

श्रेष्ठ प्रजापालक—राजा दिलीप एक श्रेष्ठ आश्रयदाता एवं प्रजापालक थे। कवि ने लिखा है कि भयंकर और मनोहर राजगुणों से वे आश्रितजनों को जलजन्तु और रत्नों से समुद्र के समान दूर रखने वाले आश्रयदाता हुए। उनके राज्य में प्रजा मनु द्वारा प्रणीत नियमों का अनुशासित होकर पालन करती थी—

'रेखामात्रमपि क्षुण्णादा मनोर्वर्त्मनः परम्।
न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः॥' (1/17)

नियामक उस दिलीप की प्रजा गाड़ी के पहिए के समान मनु काल से अभ्यस्त मार्ग से रेखामात्र भी बाहर न चली।

पुनः जैसे सूर्य अपनी किरणों से पृथिवी का जल खींचकर उसका सहस्रगुना जल वृष्टि के रूप में लौटा देता है, वैसे ही दिलीप भी प्रजा से प्राप्त सम्पूर्ण कर को उसी के कल्याणार्थ नियोजन कर देते थे।

वे सच्चे अर्थों में प्रजा के पिता थे। क्योंकि वे ही उन्हें शिक्षा देने वाले थे, पालन-पोषण करने वाले थे तथा उनकी रक्षा करने वाले थे। उनके पिता तो केवल जन्मदाता मात्र थे—

"प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः॥" (1/24)

गुप्तमन्त्रणा एवं सामादि उपायों के प्रयोक्ता—राजा दिलीप अत्यन्त कुशल प्रशासक थे। वे अपना विचार गुप्त रखने वाले तथा आकार एवं चेष्टा को छिपाये रखने वाले थे। उनके कार्यों का पता तब ही चलता था जबकि फल प्राप्ति होती थी। इससे पूर्व कुछ भी पता नहीं चलता था।

वे निर्भीक होकर अपनी रक्षा करते थे, अरोग रहकर धर्म करते थे, लोभ रहित होकर

Scanned with CamScanner

धनोपार्जन करते थे, आसक्ति रहित होकर सुख का अनुभव करते थे।

विविध गुणों की खान—राजा दिलीप विविध गुणों से युक्त थे। ज्ञान में मौन, सामर्थ्य में क्षमा, दान में प्रशंसा राहित्य— ये गुण उस दिलीप में अनुरक्त होने के कारण सहोदर जैसे थे—

"ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव॥" ॥1/22॥

ज्ञानवृद्ध—राजा दिलीप यद्यपि अवस्था से युवक थे परन्तु युवावस्था में ही विषयों का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इस प्रकार विषयों के वश में न आने वाले समस्त विद्याओं के पारंगत धर्मपरायण उस राजा दिलीप में वृद्धावस्था के बिना बुढ़ापा ज्ञात होता था—

"अनाकृष्टस्य विषयैर्विद्यानां पारदृश्वनः।
तस्य धर्मरतेरासीद् वृद्धत्वं जरसा विना॥" ॥1/23॥

आदर्श-शासक—राजा दिलीप एक आदर्श प्रशासक थे। उनके राज्य में प्रजा सब प्रकार से निश्चिन्त जीवन का निर्वाह करती थी। उस समय चोरी का भय नहीं था। राजा दिलीप को सज्जन शत्रु थी, रोगी को जिस प्रकार औषध प्रिय होती है, उसी प्रकार प्रिय था तथा दुष्ट प्रिय होने पर भी सर्प से डसी हुई अंगुलि की तरह त्याज्य था।

सम्पूर्ण पृथ्वी पर उनका एकछत्र राज्य था। सम्पूर्ण पृथ्वी का वे एक नगरी के समान शासक करते थे।

सन्तानाभाव से पीड़ित—राजा दिलीप सब प्रकार से सम्पन्न एवं महान् व्यक्तित्व के धनी थे। सुदक्षिणा उनकी पत्नी थी जिससे वे अपने को स्त्रीवाला समझते थे। परन्तु सन्तान न होने के कारण वे अत्यन्त चिन्तित रहते थे। जब बहुत समय व्यतीत हो गया, तब उन्होंने पुत्र प्राप्ति के लिए अनुष्ठान करने की इच्छा से अपने राज्य का भार मन्त्रियों पर सौंप दिया। उसके बाद पुत्र की इच्छा से ब्रह्माजी की पूजा करके वे दोनों पति-पत्नी कुलगुरु वशिष्ठ के आश्रम की ओर चले गये।

गुरुभक्ति से ओत-प्रोत—सूर्यवंशी राजा दिलीप गुरुभक्ति से ओतप्रोत थे। जब किसी भी प्रकार का संकट वे अनुभव करते थे तो अपने गुरु के समीप पहुँचकर उन्हीं से उसका समाधान करवाते थे। सन्तान न होने पर भी वे अपनी पत्नी सहित गुरु के आश्रम में पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर जितेन्द्रिय मुनियों ने रक्षक, नीतिविशारद सपत्नीक उस राजा दिलीप का सत्कार किया। राजा एवं रानी ने वशिष्ठ एवं अरुन्धती की चरण वन्दना की। मुनि ने राजा से कुशल क्षेम पूछी। राजा ने राज्य में सब प्रकार का कुशल-मंगल बतलाया तथा उसका कारण स्वयं मुनि वशिष्ठ को ही माना।

इसके बाद अपनी व्यथा को गुरु से इन शब्दों में कहा— 'किन्तु आपकी इस बहू में अपने समान सन्तति को न देखकर मुझे रत्नगर्भा सात द्वीपों सहित यह पृथ्वी भी अच्छी नही लगती।'

तत्पश्चात् जैसा गुरु ने आदेश दिया वैसा ही राजा व रानी ने किया। गुरु ने कहा कि तुम सुरभि की पुत्री नन्दिनी की सेवा करो, निश्चय ही वह प्रसन्न होकर तुम्हारा कामना को सफल कर सकती है। सेवा की विधि बतलाते हुए गुरु ने कहा कि "जंगली कन्द-कूल फल खाते हुए तुम सदा इस नन्दिनी के पीछे चल कर अभ्यास से विद्या की तरह प्रसन्न करने का उद्योग करो। इस नन्दिनी के चलने पर चलों, ठहरने पर ठहरों, बैठने पर बैठों और पानी पीने पर पानी पीओं।" तुम्हारे साथ यह सुदक्षिणा भी संयमपूर्वक पूजित इस नन्दिनी के पीछे तपोवन के अन्त तक सुबह के समय जाया करे और सायं अगुवानी किया करें।

Scanned with CamScanner

राजा एवं रानी इसके बाद वहीं आश्रम में रहे तथा जैसा गुरू ने निर्देश दिया था तदनुरूप दोनों ने नन्दिनी की सेवा की। यहाँ तक कि गुरु की धेनु नन्दिनी के लिए अपने शरीर तक को सिंह के समक्ष अर्पित कर दिया। संक्षेप में, हम यह कह सकते हैं कि प्रथम दो सर्गों में राजा दिलीप की गुरुभक्ति प्रबल रूप में व्यक्त हुई है।

गौ सेवा में तल्लीन—रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में दिलीप का चरित्र एक श्रेष्ठ गो सेवक के रूप में उभर कर सामने आया है। प्रातःकाल से रात्रि में शयन-पर्यन्त हम उन्हें नन्दिनी की सेवा में तत्पर देखते हैं। कवि ने उनकी सेवा का वर्णन करते हुए लिखा हैं—

"स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां
निषेदुषीमासनबन्धधीरः।
जलाभिलाषी जलमाददानां
छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्॥"

"राजा दिलीप उस नन्दिनी के ठहरने पर ठहरते हुए, चलने पर चलते हुए, बैठने पर बैठते हुए, पानी पीने पर पानी पीते हुए, छाया के समान उसके पीछे-पीछे चलें।"

वे उसकी सेवा में इतने तल्लीन थे कि पत्नी-सहित पास में रखे हुए पूजोपहार औद्र दीपक वाली नन्दिनी के निकट बैठ, उसके सोने के बाद सोते थे और सुबह उसके उठने के बाद उठते थे।

सिंह द्वारा नन्दिनी पर आक्रमण करने पर वे अपने राज्य व शरीरादि की कोई परवाह नहीं करते तथा येन-केन प्रकारेण धेनु को मुक्त कराने का प्रयास करते हैं। अन्त में अन्य कोई उपाय न दिखाई देने पर स्वयं अपने शरीर को सिंह के समक्ष अर्पित कर देते हैं। इससे नन्दिनी अत्यन्त प्रसन्न होती है तथा वर मांगने के लिए कहती हैं।

यशः प्रिय—राजा दिलीप भौतिक शरीर के लिए किंचित मात्र भी चिन्तित नहीं है, उसे यदि चिन्ता है तो अपने यशों रूप शरीर की है। अतः वह सिंह से स्पष्ट कहता हैं—

"किमप्यर्हिस्यस्तव चेन्यतोऽहं
यशः शरीरे भव मे दयालुः।
एकान्तविध्वंसिषु यविधानां
पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु॥" (2/57)

"यदि मैं तुम्हारे विचार से अवश्य हूँ तो मेरे यशो रूप शरीर पर दया करो। हमारे जैसे लोगों की अवश्य विनाश होने वाले पाँच महाभूतों से बने भौतिक शरीर में अपेक्षा नहीं होती।"

उपसंहार—उक्त सम्पूर्ण विवेचनोपरान्त हम यह कह सकते हैं कि राजा दिलीप का चरित्र एक आदर्श नायक के रूप में चित्रित हुआ है। वह सर्वगुणसम्पन्न नृप है। एक चक्रवर्ती राजा, प्रजावत्सल, गुरुभक्त एवं यशःप्रिय है। अपने कर्त्तव्य का पूर्णतया पालन करने वाला है। गुरुवशिष्ठ की आज्ञानुसार नन्दिनी की सेवा करके एवं उसे प्रसन्न करके पुत्र प्राप्त करता हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न—रघुवंश प्रथम सर्ग का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—संस्कृत साहित्य जगत के सम्राट महाकवि कालिदास ने जिन सात रचनाओं को रचा है उनमें रघुवंश नाम महाकाव्य सर्वश्रेष्ठ हैं इस महाकाव्य के माध्यम से कवि कालिदास ने सूर्यवंशी राजाओं का विस्तार से वर्णन किया है ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि ने नमस्कारात्मक मंगलाचरण करते हुए जगत के माता-पिता पार्वती-शिव की वन्दना की है उसके बाद कवि ने स्वयं का विनय भाव प्रकट किया है।

Scanned with CamScanner

रघुवंशी राजाओं के चरित्र की विशेषताएँ बतलाते हुए कवि ने लिखा है कि वे राजा लोग अत्यन्त संयमी धर्म निष्ठ तथा बुद्धिमान थे। वे जन्म से ही शुद्ध तथा फल प्राप्ति तक कर्म करने वाले थे सम्पूर्ण सृष्टि के सम्राट थे उनके रथों का मार्ग स्वर्ग तक जाता था अग्नि हवन करते तथा याचकों को दान देना नित्य धर्म था। वे अपराध के अनुसार दण्ड देते थे उचित समय पर जग जाते थे। उन्होंने दान के लिए ही धन इकट्ठा किया। सत्य के लिए अल्पभाषण किया, यश के लिए विजयी यात्राएँ की, शिशुकाल में विद्या, युवा अवस्था में भोग, वृद्धा अवस्था में मुनि वन जाना, अन्त में योग की उपासना से प्राण त्यागना उनकी नीजि विशेषताएँ थी। पृथ्वी पर्यन्त तक के राजा उनके भक्त थे तथा मनु के उस पवित्र कुल में दिलीप श्रेष्ठ राजा उत्पन्न हुआ। उसकी शारीरिक दृष्टि को देखकर लगता था मानो क्षत्रिय धर्म का अवतार है। वह अत्यधिक बुद्धिमान आदमी, प्रेमी, परिश्रमी तथा फलों को भोगने वाला सम्राट था उसने मनोहारी तथा कोमल दोनों ही प्रकार के गुण थे। वह प्रजाओं को मनुनिर्दिष्ट परस्ती पर चलाता था, प्रजाओं के कल्याण के लिए कर लेता था। उसके समस्त विस्तार गुप्त रहते थे वह धर्म, कर्म तथा काम का समान मान से पालन करता था, प्रजाओं के लिए शिक्षा, भरण पोषण तथा रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझता था। अपने राज्य में तस्करी नहीं होती थी उसने सम्पूर्ण पृथ्वी पर शासन किया।

दिलीप के सुदक्षिणा नामक पत्नी थी जो अत्यधिक उदारता के कारण प्रसिद्ध थी किन्तु दुर्भाग्य से उसके सन्तान का अभाव था। एक दिन उसने राज्य का सारा भार मंत्रियों पर डालकर उन दोनों पति-पत्नी ने वशिष्ठ कुल गुरु के आश्रम की ओर प्रस्थान किया। आश्रम की तरफ जाते समय स्पर्श में सुख देने वाली वायु सुख दे रही है। मयूर ध्वनि सुना रहे है वे पति-पत्नी हरिणों के जोड़ों की समानता देख रहे थे। वे कभी-कभी उपर उड़ती हुई सारस पंक्ति को देखते थे। ग्वालों के द्वारा लाए गए ताजे मक्खन को खा रहे थे। दुर्लभ यशवाला राजा दिलीप सायंकाल को वशिष्ठ के आश्रम में पहुँचा और रथ से नीचे उतरा। मंत्रियों को अपनी पत्नी को उतारने को कहा। उन्होंने देखा कि कुछ वयक्ति हाथों में समिधा लिए हुए लौट रहे थे जिनकी अदृश्य अग्नियां स्वागत कर रही थी। वहाँ पर हरिण दरवाजे पर ऋषि पत्नियों की सन्तान के समान निवार धान को खाने के लिए खड़े थे। सायंकाल के समय वशिष्ठ के दर्शन करके चरण स्पर्श किया। मुनि ने प्रसन्न होकर जब राज्य की कुशलता के बारे में पूछा, तब दिलीप ने कहा—मेरे राज्य में सातों अंगों में कुशलता है आप के मन्त्रों के प्रभाव से मेरे शत्रु दूर से शान्त हो जाते हैं आपके द्वारा डालि गई आहुतियाँ मेरे खेतों तक वर्षा बन कर आती हैं।

मेरी प्रजाओं में कोई आतंक नहीं है, मेरी प्रजाए 100 वर्ष तक जीती है। इतना होने पर भी मुझे ये पृथ्वी अच्छी नहीं लगती, सन्तान न होने के कारण पितरों को दिया गया श्राद्ध तर्पण कोई काम नहीं आता। मुझे यह पितृ ऋण ठीक उसी प्रकार कष्ट देता है जिस प्रकार बिना स्नान के खाए हुए हाथी को खूंटा कष्ट देता है। दिलीप के सन्तान नहीं हो रही थी तो वशिष्ठ से पूछने पर वशिष्ठ ने कहा— पाताल लोक में देवताओं को युद्ध में सहायता के बाद तुम वापस पृथ्वी पर लोट रहे थे तो रास्ते में कल्पवृक्ष के नीचे कामधेनु बैठी थी उसको तुमने प्रणाम नहीं किया तो उसने रुष्ठ होकर तेरे को शाप दे दिया। अब वह इस समय पाताल लोक में है उसकी पुत्री मेरे पास है उसको तुम यदि कामधेन की प्रतिनिधि समझकर सेवा करो तो तुम्हें मन इच्छित फल मिल सकता हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न—'कालिदास संस्कृत साहित्य के महान् कवि है'—इस पर अपने विचार प्रकट कीजिये।

उत्तर—कालिदास भारतीय संस्कृति के रसात्मक व्याख्याता है। भारतीय संस्कृति के तीन महान् विषयों—त्याग, तपोवन एवं तपस्या का इन्होंने विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। शाकुन्तल, रघुवंश व कुमारसम्भव में तीनों का उदात्त रूप अंकित है। कालिदास के काव्य में भारतीय सौन्दर्य तत्व का उत्कृष्ट रूप अभिव्यक्त हुआ है। इनकी सौन्दर्य दृष्टि बाह्य जगत् के चित्रण में दिखाई पड़ती है, जहाँ कवि ने मनोरम सौन्दर्यानुभूति की है। मनुष्य एवं प्रकृति दोनों का मधुर सम्पर्क और अद्भुत एकरसता दिखा कर कवि ने प्रकृति के भीतर स्फुरित होने वाले हृदय को पहचाना है। इनका प्रकृति प्रेम पदे पदे प्रशंसनीय है। शकुन्तला, मेघदूत, ऋतुसंहार तथा अन्य ग्रन्थों के प्रकृति वर्णन कवि की महान् देन के रूप में प्रतिष्ठित है। इनके अधिकांश प्रकृति वर्णन स्वाभाविकता से पूर्ण तथा रसमय है। कवि ने प्रकृति को भावों का अवलम्बन बना कर उसके द्वारा रसानुभूति कराई है। कुमारसम्भव एवं शकुन्तला में पशुओं पर प्रकृति के मादक तथा करुण प्रभाव का निदर्शन हुआ है। कुमारसम्भव मानो कवि की सौन्दर्य चेतना की रमणीय रंगशाला है। इसमें हिमालय की गोद में होने वाली घटनाएँ प्राकृतिक सौन्दर्य वर्णन के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करती है। कवि ने हिमालय का बड़ा ही मनोग्राही एवं सरस वर्णन किया है, जिसमें उसकी दिव्यता प्रदीप्त हो उठती है। हिमालय को कवि ने जड़ सृष्टि का रूप न देकर देवात्मा कहा है, जहाँ पर सभी देवता आकर निवास करते हैं।

कालिदास भारतीय सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण के कवि है। इनकी कविता में कलात्मक समृद्धि एवं भावों का उदात्त रूप दिखाई पड़ता है। उसमें मानवतावादी स्वर मुखरित हुआ है, जिसमें प्रेम सौन्दर्य तथा मानवता को उन्नत करने वाले शाश्वत भावों की अभिव्यक्ति हुई है। इनकी सभी रचनाओं में प्रकृति की मनोरम प्रतिच्छवि उतारी गई है। निसर्ग कन्या शकुन्तला के अनिन्द्य सौन्दर्य वर्णन में तथा मेघदूत की विरह विदग्धा यक्षिणी के रूप चित्रण में कवि की सौन्दर्य प्रियता का चरम विकास प्रदर्शित हुआ है। अपने दोनों महाकाव्यों रघुवंश और कुमारसम्भव, में कवि की दृष्टि सौन्दर्याभिव्यक्ति, प्रकृति प्रेम, उदात्त, चरित्र, भाषा की समृद्धि एवं कलात्मक उन्मेष की ओर लगी हुई है। कवि सौन्दर्य के बाह्य एवं आन्तरिक दोनों ही पक्षों का उद्घाटन करता है। रघुवंश के द्वितीय सर्ग में सुदक्षिणी एवं दिलीप के उदात्त स्वरूप के चित्रण में मानव चरित्र के अन्तःसौन्दर्य की अभिव्यक्ति हुई है। कवि ने सौन्दर्य का वर्णन करते हुए तदनुरूप उपमाओं का नियोजन कर उसे अधिक प्रभावोत्पादक बनाया है। कालिदास उपमा के सम्राट् है। इनकी उपमाओं की रसात्मकता व रसपेशलता अत्यन्त हृदयहारिणी है। रघुवंश के इन्दुमती स्वयंवर में दीपशिखा की उपमा देकर कवि 'दीपशिखा कालिदास' के नाम से विख्यात हो गया है।

कालिदास की उपमा में स्थानीय रंजन का वैशिष्ट्य दिखाई पड़ता है तथा कवि की सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति प्रकट होती है। कवि उपमेय के लिंग, वचन और विशेषण की उपमान में भी उपन्यस्त कर अपनी अद्भुत चातुरी तथा कलात्मकता का परिचय देता है। कालिदास के उपमा-प्रयोग की यह बहुत बड़ी विशेषता है। कवि के प्रकृति वर्णन की विशेषता यह है कि प्रकृति चित्रण के समय वह स्थान एवं समय पर अधिक बल देता है। जिस स्थान की जो विशेषता होती है और जो वस्तु जहाँ उत्पन्न होती है, कवि उनका वहीं वर्णन करता है। प्रत्येक काव्य में यह इस तथ्य

Scanned with CamScanner

पर सदा ध्यान रखता है। रघुवंश महाकाव्य में विहार के प्रकृति चित्रण में ईख एवं धान दोनों खेतों की रक्षा करती हुई ग्रामवधू का अत्यन्त मोहक चित्र उपस्थित किया गया है।

कालिदास ने नागरिक जीवन की समृद्धि एवं विलासिता का जहाँ चित्र अंकित किया है, वहीं तपोनिष्ठ साधकों के पवित्र निवास स्थान का भी स्वाभाविक चित्र उपस्थित किया है। यह कहना कि कवि का मन केवल विलासी नागरिक जीवन के ही वर्णन में रमता है वस्तु स्थिति से अपने को दूर रखना है। कवि का मन जितना उज्जयिनी, अलका एवं अयोध्या के वर्णन में रमा है, उससे कम उसकी आसक्ति पार्वती की तपनिष्ठा एवं कण्व के आश्रम वर्णन में नहीं दिखाई पड़ती। कालिदास रसवादी कलाकार है। इन्होंने सरस एवं कोमल रसों का ही वर्णन किया है। इसका मूल कारण कवि का प्रधानतः श्रृंगार रस के प्रति आकर्षण होना ही है। श्रृंगार, प्रकृति वर्णन एवं विलासी नागरिक जीवन को अंकित करने में कालिदास संस्कृत में अकेले हैं। इनका स्थान कोई अन्य ग्रहण नहीं कर सकता। श्रृंगार के दोनों ही पक्षों का सुन्दर वर्णन रघुवंश, मेघदूत, कुमारसम्भव एवं शाकुन्तला में पूरे उत्कर्ष पर दिखाई पड़ता है। संयोग के आलम्बन तथा उद्दीपन दोनों पक्षों का सुन्दर चित्र कुमारसम्भव के तीसरे सर्ग में उपलब्ध होता है। वसन्त के मादक प्रभाव को कवि ने चेतन एवं अचेतन दोनों प्रकार के प्राणियों पर समान रूप से दर्शाया है। भौंरा अपनी प्रिया के प्रति प्रेमोन्मत्त होते दिखाया गया है।

अजविलाप, रतिविलाप एवं यक्ष के अश्रुसिक्त सन्देशकथन में करुणा स्रोत उमड़ पड़ता है। रतिवालाप तथा अजविलाप को आचार्यों ने कालिदास की उत्कृष्ट 'करुणा गीति' माना है। इसमें अतीत की प्रणय क्रीड़ा की मधुर स्मृति के चित्र पर रह कर पाठकों के हृदय के तार को झंकृत कर देते हैं। एक सफल नाटककार होने के कारण कालिदास ने अपने दोनों महाकाव्यों में नाटकीय संवादों का अत्यन्त सफलता के साथ नियोजन किया है। दिलीप सिंह संवाद, रघु इन्द्र संवाद, कौत्स रघु संवाद, कुश अयोध्या संवाद तथा पार्वती ब्रह्मचारी संवाद उत्कृष्ट संवाद कला का निदर्शन करते हैं। कालिदास उदात्त प्रेमिल भावों के कवि हैं। इनकी प्रेम भावना में क्रमिक विकास के सोपान दिखाई पड़ते हैं। ऋतुसंहार इनकी प्रथम काव्यकृति है। अतः उसमें तरुण करुणियों के उद्दाम प्रेम का चित्रण किया गया है। पर शाकुन्तल, मेघदूत, रघुवंश एवं कुमारसम्भव में कवि ने ऐसे प्रेम का चित्रण किया है जो वासना व बाह्य रूपासक्ति से हरित होकर कठोर साधना पर आधृत है। कालिदास ने वियोग की भट्टी में वासना के कलुष को भस्मीभूत कर उसके दिव्य एवं पावन रूप का वर्णन किया है। इनका प्रेम वर्णन मर्यादित एवं स्वस्थ पारिवारिक स्नेह का रूप उपस्थित करता है।

भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट अनुराग होने के कारण कालिदास ऐसे प्रेम का वर्णन नहीं करता, जो लोकधर्म के साथ सामंजस्य स्थापित न करे। वह पति पत्नी के वैवाहिक उदात्त प्रेम को अपने काव्य का आदर्श मान कर उसमें सदाचार एवं लोकरंजन का समावेश करता है। कवि अमर्यादित एवं उच्छृखल अस्वाभाविक प्रेम को गर्हित मानकर उसके प्रति ध्यान भी नहीं देता। कवि ने अपने ग्रन्थों में स्थान स्थान पर समस्त भारतीय विद्या के प्रौढ़ अनुशीलन का परिचय दिया है। कालिदास की राजनैतिक तथा दार्शनिक मान्यताएँ ठोस आधार पर अधिष्ठित है तथा इनकी निजी सामाजिक स्थापनाएँ भी हैं। कतिपय विद्वानों ने इन तथ्यों का उद्घाटन कर कालिदास की सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना का व्याख्यान किया है। इन्होंने जीवन के शाश्वत एवं सार्वभौमिक तत्त्वों का रसात्मक चित्र प्रस्तुत कर सच्चे अर्थ में विश्व कवि की उपाधि प्राप्त की है। इनके काव्यात्मक भाव एवं काव्यात्मक शैली, उपयुक्त पद योजना, मूर्ति विधान की असाधारण क्षमता, शब्दगत संगीत एवं मधुर तथा रस पेशल भाषा इन्हें संस्कृत का सर्वश्रेष्ठ कवि सिद्ध करने में सर्वथा उपयुक्त है।

Scanned with CamScanner